Prof- Khushbu kumari
Guest Teacher,
Dept. of Political Science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Bihar

Class - B.A-I (H)
Paper - II

Topic गांधीजी : एक दार्शनिक अराजकतावादी

राज्य के सम्बन्ध में गांधीवादी विचारधारा अराजकतावादी दार्शनिक क्रोपाटकिन और विशेष रूप से दार्शनिक अराजकतावादी टॉलस्टाय के विचारों से प्रभावित है। गांधीजी ने नैतिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक तीनों ही दृष्टिकोण से राज्य की आलोचना की है। गांधीजी राज्य को एक ऐसी संस्था मानते हैं जिसका कार्य निर्धन वर्ग का शोषण करना है। स्वयं गांधीजी के शब्दों में "राज्य केन्द्रित और संगठित रूप में हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति एक सचेतन आत्मवान प्राणी है किन्तु राज्य एक ऐसा आत्महीन यन्त्र है, जिसे हिंसा से पृथक नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसकी उत्पत्ति ही हिंसा से हुई है।"

सिद्धान्त रूप में राज्य के अस्तित्व के विरुद्ध होने पर भी गांधीजी वर्तमान परिस्थितियों में राज्य को समाप्त करने के पक्ष में नहीं थे। उनका विचार था कि वर्तमान समय में मानव जीवन इतना पूर्ण नहीं है कि वह स्वयं संचालित हो सके। इसलिए समाज में राज्य और राजकीय शक्ति की आवश्यकता है, लेकिन इसके साथ ही उनका विचार है कि राज्य का कार्यक्षेत्र न्यूनतम होना चाहिए। गांधीजी के राज्य संबंधी विचारों को सैद्धान्तिक रूप से अराजकतावादी कहा जा सकता है, लेकिन न गांधीजी न तो क्रोपाटकिन और बाकुनिन की तरह हिंसा के आधार पर

Scanned with CamScanner

राज्य को समाप्त करने के पक्ष में थे और न ही उनका विचार वर्तमान परिस्थितियों में राज्य की संस्था को समाप्त करना था।

राज्य को एक आवश्यक बुराई के रूप में स्वीकार करते हुए गांधीजी ने राज्य के प्रभाव और शक्ति को अधिक-से-अधिक कम करने का प्रयत्न किया, जिससे राजसत्ता होते हुए भी व्यक्ति वास्तविक रूप में स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकें। इस संबंध में गांधीजी के द्वारा तीन सुझाव दिये गये जो इस प्रकार हैं—

(1) सत्ता का विकेन्द्रीकरण — गांधीजी के द्वारा सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुझाव राजनीतिक क्षेत्र में सत्ता के विकेन्द्रीकरण का दिया गया है। राजनीतिक क्षेत्र में गांधीजी केन्द्रीकृत सत्ता के प्रबल विरोधी और विकेन्द्रीकरण के समर्थक थे। विकेन्द्रीकृत सत्ता से उनका अभिप्राय यह था कि ग्राम पंचायतों को अपने गांवों का प्रबन्ध और प्रशासन करने के सब अधिकार दे दिये जाएं। उनका कहना था कि सत्ता का केन्द्रीकरण सदैव ही हानिकारक होता है। इसके परिणामस्वरूप कुछ थोड़े से व्यक्ति राज्य की सत्ता पर एकाधिकार स्थापित कर लेते हैं और उसका प्रयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करते हैं, जिसे रोकने का सक्षम उपाय सत्ता का विकेन्द्रीकरण ही हो सकता है।

Scanned with CamScanner

(2) राज्य का कार्यक्षेत्र न्यूनतम — राजसत्ता की बुराइयों को दूर करने का उनका दूसरा सुझाव यह है कि राज्य का कार्यक्षेत्र न्यूनतम होना चाहिए। उसके द्वारा व्यक्ति के जीवन में कम-से-कम हस्तक्षेप किया जाना चाहिए। वे हेनरी डी. थोरो के इस विचार से सहमत थे कि "सर्वोत्तम सरकार वह है, जो सबसे कम शासन करती है।"

(3) राज्य के प्रभुत्व के सिद्धान्त का खण्डन —

गांधीजी व्यक्ति और राज्य में व्यक्ति को साध्य और राज्य को साधन मात्र मानते थे और इस कारण उनके द्वारा राज्य के प्रभुत्व सिद्धान्त का खण्डन किया गया। उनका कहना था कि राज्य जनता की भक्ति का हकदार तभी हो सकता है, जब वह जनता के कल्याण का परिवर्द्धन करे।

Shubham Kumari